International Journal of Science and Research (IJSR)
ISSN: 2319-7064
Impact Factor 2025: 7.089

दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता का अध्ययन

ज्योति मिश्रा[1], डॉ. किरण त्रिपाठी[2]

शोधार्थी, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट (मध्यप्रदेश)

शोध-निर्देशक, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट (मध्यप्रदेश)

सारांश: ***शिक्षा व्यक्ति के विकास का आधार है और हर विद्यार्थी को उसकी जरूरतों के हिसाब से शिक्षा देना समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता कई चीजों पर निर्भर करती है, जिनमें से एक महत्वपूर्ण चीज है कि वे कैसे सीखते हैं। यह तरीका उनकी अधिगम शैली कहलाता है। अधिगम शैली से मतलब है कि विद्यार्थी कैसे ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसका विश्लेषण करते हैं, और उसे व्यवहार में लाते हैं। इस अध्ययन का मकसद यह देखना था कि दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली और उनकी शैक्षणिक सफलता के बीच क्या संबंध है। इस अध्ययन में हमने वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया। हमने 100 दिव्यांग विद्यार्थियों को चुना और उनकी अधिगम शैली को मापने के लिए एक विशेष प्रश्नावली का उपयोग किया। उनकी शैक्षणिक सफलता को मापने के लिए हमने उनके वार्षिक परीक्षा के परिणाम देखे। परिणामों से पता चला कि दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली और उनकी शैक्षणिक सफलता के बीच एक मजबूत संबंध है। जिन विद्यार्थियों की अधिगम शैली बेहतर थी, उनके परीक्षा के परिणाम भी अच्छे थे। यह दिखाता है कि अगर हम विद्यार्थियों की अधिगम शैली के हिसाब से शिक्षण रणनीतियाँ बनाएं, तो यह दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में बहुत मददगार हो सकता है।***

मुख्य शब्द: दिव्यांग विद्यार्थी, अधिगम शैली, शैक्षणिक सफलता, समावेशी शिक्षा, शैक्षिक उपलब्धि, अधिगम प्रक्रिया।

1. प्रस्तावना

शिक्षा हमारे जीवन में बहुत बड़ा महत्व रखती है। यह न केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करती है, बल्कि हमारे बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास का आधार भी है। किसी भी देश की प्रगति उसके नागरिकों की शिक्षा के स्तर पर निर्भर करती है। इसलिए, प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता, रुचि और आवश्यकताओं के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना आज के समय में बहुत जरूरी है।

भारतीय संविधान में सभी नागरिकों को समानता और शिक्षा का अधिकार दिया गया है। संविधान के अनुच्छेद 21(क) और शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर सुनिश्चित करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने समावेशी और न्यायपूर्ण शिक्षा व्यवस्था पर विशेष बल दिया है, जिसमें दिव्यांग विद्यार्थियों को मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने और उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण-अधिगम वातावरण प्रदान करने पर जोर दिया गया है।

समावेशी शिक्षा का अर्थ है कि हर विद्यार्थी, चाहे वह किसी भी प्रकार की शारीरिक, मानसिक, दृष्टि, श्रवण या अन्य दिव्यांगता से प्रभावित हो, उसे सामान्य विद्यालयों में समान अवसरों के साथ शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। यह न केवल दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि उनमें आत्मविश्वास, सामाजिक सहभागिता और आत्मनिर्भरता की भावना को भी विकसित करता है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और सीखने की विशेषताओं को ध्यान में रखकर संचालित की जाए।

दिव्यांग विद्यार्थियों की सीखने की आवश्यकताएं सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में भिन्न हो सकती हैं। प्रत्येक विद्यार्थी ज्ञान को ग्रहण करने, समझने और स्मरण रखने के लिए अलग-अलग तरीकों का उपयोग करता है। कुछ विद्यार्थी चित्रों, चार्टों और दृश्य सामग्रियों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं, जिन्हें दृश्य अधिगम शैली कहा जाता है। कुछ विद्यार्थी सुनकर और चर्चा के माध्यम से बेहतर सीखते हैं, जिन्हें श्रव्य अधिगम शैली कहा जाता है। वहीं, कुछ विद्यार्थी गतिविधियों, प्रयोगों और प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं, जिन्हें क्रियात्मक या स्पर्शात्मक अधिगम शैली कहा जाता है।

अधिगम शैली विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आयाम है। यह इस बात को निर्धारित करती है कि विद्यार्थी सूचना को किस प्रकार ग्रहण करता है, उसका संगठन कैसे करता है और प्राप्त ज्ञान का उपयोग किस प्रकार करता है। यदि शिक्षण प्रक्रिया विद्यार्थियों की अधिगम शैली के अनुरूप हो, तो सीखना अधिक अर्थपूर्ण, प्रभावी और स्थायी बन जाता है। इसके विपरीत, यदि शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की अधिगम शैली से मेल नहीं खातीं, तो उनकी सीखने की गति, रुचि और शैक्षणिक उपलब्धि प्रभावित हो सकती है।

दिव्यांग छात्रों के संदर्भ में अधिगम शैली का महत्व और अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि उनकी शारीरिक या संवेदी सीमाएँ उनके सीखने के तरीकों को प्रभावित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, दृष्टिबाधित विद्यार्थी श्रव्य अधिगम पर अधिक निर्भर हो सकते हैं, जबकि श्रवणबाधित विद्यार्थी दृश्य सामग्रियों के माध्यम से बेहतर सीख सकते हैं। इसी प्रकार, बौद्धिक या अधिगम संबंधी कठिनाइयों वाले विद्यार्थियों को गतिविधि आधारित शिक्षण अधिक प्रभावी लग सकता है। इसलिए, दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली की पहचान करना और उसके अनुरूप शिक्षण रणनीतियों का विकास करना बहुत जरूरी है।

शैक्षणिक सफलता शिक्षा की प्रभावशीलता का एक महत्वपूर्ण सूचक मानी जाती है। यह विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों में प्राप्त उपलब्धियों, परीक्षा परिणामों और अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति को व्यक्त करती है। अनेक शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक

सफलता केवल उनकी बुद्धि या योग्यता पर ही निर्भर नहीं करती, बल्कि अधिगम शैली, प्रेरणा, अध्ययन आदतों, पारिवारिक वातावरण और विद्यालयी संसाधनों जैसे अनेक कारकों से प्रभावित होती है। इनमें अधिगम शैली एक ऐसा कारक है जो विद्यार्थियों के सीखने के अनुभवों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

वर्तमान समय में समावेशी शिक्षा के विस्तार के साथ यह जानना बहुत जरूरी हो गया है कि दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली उनकी शैक्षणिक सफलता को किस सीमा तक प्रभावित करती है। यदि अधिगम शैली और शैक्षणिक सफलता के मध्य सकारात्मक संबंध पाया जाता है, तो शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षा-नीति निर्माताओं को दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए अधिक प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ विकसित करने में मदद मिल सकती है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए यह अध्ययन "दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली और शैक्षणिक सफलता" विषय पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य दोनों चरों के मध्य संबंध का वैज्ञानिक विश्लेषण करना और समावेशी शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करना है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

दिव्यांग विद्यार्थियों की शिक्षा से संबंधित अधिकांश शोध उनकी समस्याओं, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर केंद्रित रहे हैं। अधिगम शैली और शैक्षणिक सफलता के संबंध में विशेष रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों पर अपेक्षाकृत कम अध्ययन उपलब्ध हैं।

इस अध्ययन का महत्व निम्नलिखित कारणों से है—

1) दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम आवश्यकताओं को समझने में सहायता।
2) समावेशी शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने में योगदान।
3) शिक्षकों को उपयुक्त शिक्षण विधियाँ चुनने में सहायता।
4) व्यक्तिगत शिक्षण योजनाओं के निर्माण में सहयोग।
5) शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार हेतु वैज्ञानिक आधार प्रदान करना।

साहित्य समीक्षा

Dunn एवं Dunn (1993) के अनुसार प्रत्येक विद्यार्थी की अधिगम शैली विशिष्ट होती है तथा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत अधिगम प्राथमिकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रदान करने से अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो सकती है। उनके अनुसार शिक्षण वातावरण, शिक्षण विधि तथा अधिगम संबंधी व्यक्तिगत विशेषताओं को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाना उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने में सहायक हो सकता है।

Reid (1995) ने अधिगम शैलियों के संदर्भ में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत अधिगम प्राथमिकताओं का अध्ययन किया। उनके कार्य से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की अधिगम गतिविधियों एवं माध्यमों के प्रति अलग-अलग प्राथमिकताएँ रखते हैं। अतः शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में इन व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना विद्यार्थियों के प्रभावी अधिगम के लिए महत्वपूर्ण है।

Sharma (2018) ने भारतीय संदर्भ में अधिगम एवं शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित विभिन्न पक्षों का अध्ययन किया। अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताएँ एवं अधिगम संबंधी आवश्यकताएँ उनके सीखने की प्रक्रिया और शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती हैं। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के संदर्भ में उपयुक्त शिक्षण विधियों एवं अधिगम वातावरण की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाती है।

UNESCO (2020) UNESCO की *Global Education Monitoring Report 2020 Inclusion and education: All means all* के अनुसार समावेशी शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी की विविध आवश्यकताओं को स्वीकार करते हुए शिक्षा में समान अवसर सुनिश्चित करना है। रिपोर्ट में विशेष रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए शिक्षा व्यवस्था को उनकी विविध क्षमताओं एवं आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी बनाने पर बल दिया गया है। इसके अंतर्गत पाठ्यचर्या, शिक्षण-पद्धति, मूल्यांकन तथा विद्यालयी वातावरण में आवश्यक अनुकूलन करना आवश्यक है। UNESCO के अनुसार, समावेशी शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को विद्यालय में प्रवेश देना नहीं, बल्कि ऐसा वातावरण उपलब्ध कराना है जिसमें सभी विद्यार्थी सम्मान, सहभागिता और समान अवसर के साथ सीख सकें (UNESCO, 2020).

बवालसाह एवं हद्दाद (2020) ने अधिगम अक्षमता वाले विद्यार्थियों की पसंदीदा अधिगम शैलियों का अध्ययन किया। अध्ययन में 184 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों में **श्रव्य एवं गतिसंवेदी अधिगम शैलियाँ** अपेक्षाकृत अधिक प्रमुख थीं। अध्ययन में अधिगम शैली तथा ग्रेड-पॉइंट औसत के बीच संबंध भी पाया गया। यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें दिव्यांगता, अधिगम शैली तथा शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

अलोनी, ज़ायोन एवं स्पेक्टर-लेवी (2024) ने मध्य विद्यालय के विद्यार्थियों में अधिगम प्राथमिकताओं, अधिगम अक्षमता तथा विज्ञान विषय में शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में 305 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। परिणामों से पता चला कि विद्यार्थियों में दृश्य तथा संवेदी-गतिसंवेदी अधिगम प्राथमिकताएँ अधिक प्रमुख थीं। अध्ययन में कुछ अधिगम प्राथमिकताओं तथा वैज्ञानिक ज्ञान एवं कौशल के मध्य महत्वपूर्ण संबंध भी पाया गया। यह अध्ययन वर्तमान शोध में अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता के संबंध को समझने के लिए उपयोगी है।

क्लेमेंटी एवं जिमेनेज़ लोपेज़ (2024) ने माध्यमिक विद्यालयों में विशिष्ट अधिगम विकार वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों एवं अधिगम अनुभवों का अध्ययन किया। अध्ययन में 76 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों की अधिगम प्राथमिकताओं के साथ-साथ शिक्षण विधियाँ एवं अधिगम वातावरण भी उनके अधिगम अनुभव को प्रभावित करते हैं। अध्ययन ने दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए समावेशी एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण रणनीतियों की आवश्यकता पर बल दिया।

लिस्नावती, तान्या, साल्साबिला एवं फिट्रियानी (2024) ने बौद्धिक दिव्यांगता वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों में विविधता पाई जाती है। कुछ विद्यार्थी दृश्य माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखते हैं, जबकि कुछ में श्रव्य माध्यम की प्राथमिकता दिखाई देती है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि सरल भाषा, ठोस उदाहरण तथा रोचक गतिविधियाँ बौद्धिक दिव्यांग विद्यार्थियों के अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक हो सकती हैं।

अमीन, ततलाह एवं अकबर (2024) ने विद्यार्थियों की विभिन्न अधिगम शैलियों तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन

किया। अध्ययन के परिणामों में विभिन्न अधिगम शैली समूहों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि में स्पष्ट महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। हालांकि, अधिगम शैलियों के अनुरूप शिक्षण प्रदान करने के पश्चात विद्यार्थियों की उपलब्धि में सुधार देखा गया। यह निष्कर्ष संकेत करता है कि केवल अधिगम शैली की पहचान करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की अधिगम संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखना भी आवश्यक है।

प्रामेस्टी, सोएकर्मियानी, स्याहरानी, ऐनिन एवं नोविता (2025) ने बौद्धिक दिव्यांगता वाले विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों तथा अधिगम परिणामों का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थियों में दृश्य अधिगम शैली अपेक्षाकृत अधिक प्रमुख थी। दृश्य सामग्री एवं उपयुक्त शिक्षण माध्यमों के प्रयोग के पश्चात विद्यार्थियों के पूर्व-परीक्षण एवं पश्च-परीक्षण परिणामों में सुधार देखा गया। अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त अधिगम माध्यम एवं शिक्षण सामग्री उनके अधिगम परिणामों को बेहतर बनाने में सहायक हो सकती है।

उपरोक्त अध्ययनों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि **दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैलियों में पर्याप्त विविधता पाई जाती है**। विभिन्न अध्ययनों में दृश्य, श्रव्य तथा गतिसंवेदी अधिगम प्राथमिकताओं को प्रमुखता प्राप्त हुई है। साथ ही, कुछ अध्ययनों ने अधिगम शैली एवं शैक्षणिक उपलब्धि अथवा अधिगम परिणामों के मध्य संबंध की ओर संकेत किया है। तथापि, सभी अध्ययनों में यह संबंध समान रूप से स्पष्ट नहीं है।

साहित्य के विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता केवल उनकी अधिगम शैली पर निर्भर नहीं करती, बल्कि **शिक्षण विधि, अधिगम वातावरण, शिक्षण सामग्री तथा व्यक्तिगत आवश्यकताओं** की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता के मध्य संबंध का अध्ययन वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है। विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में विभिन्न प्रकार के दिव्यांग विद्यार्थियों को सम्मिलित करते हुए किए गए अनुभवजन्य अध्ययनों की आवश्यकता दिखाई देती है। यही शोध-अंतराल वर्तमान अध्ययन के औचित्य को स्पष्ट करता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1) दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली का अध्ययन करना।
2) दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता का अध्ययन करना।
3) अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता के मध्य संबंध ज्ञात करना।
4) विभिन्न अधिगम शैलियों के आधार पर शैक्षणिक सफलता में अंतर का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

H01: दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है।

H02: विभिन्न अधिगम शैलियों वाले दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अनुसंधान पद्धति

1.1 अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

1.2 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के दिव्यांग विद्यार्थी सम्मिलित किए गए।

1.3 निदर्शन

100 दिव्यांग विद्यार्थियों का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन द्वारा किया गया।

उपकरण

(क) अधिगम शैली प्रश्नावली
- दृश्य अधिगम शैली
- श्रव्य अधिगम शैली
- क्रियात्मक अधिगम शैली

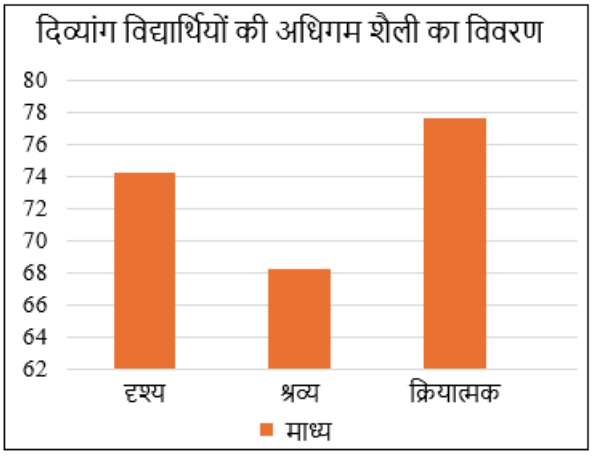
(ख) शैक्षणिक सफलता
विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा परिणामों के प्रतिशत अंक।

सांख्यिकीय तकनीक
- माध्य (Mean)
- मानक विचलन (SD)
- t-परीक्षण
- पियर्सन सहसंबंध गुणांक (r)

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली का विवरण

अधिगम शैली	N	माध्य	SD
दृश्य	35	74.25	8.12
श्रव्य	30	68.25	7.54
क्रियात्मक	35	77.63	6.87



तालिका 1 की व्याख्या

तालिका 1 के अनुसार दिव्यांग विद्यार्थियों में क्रियात्मक अधिगम शैली का माध्य (77.63) सर्वाधिक पाया गया, जबकि श्रव्य अधिगम शैली का माध्य (68.45) सबसे कम प्राप्त हुआ। दृश्य अधिगम शैली का माध्य 74.25 पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि अधिकांश दिव्यांग विद्यार्थी गतिविधियों एवं प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से सीखना अधिक पसंद करते हैं। मानक विचलन के मानों से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के अधिगम शैली स्कोर में अधिक भिन्नता नहीं है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अध्ययन में सम्मिलित दिव्यांग विद्यार्थियों में क्रियात्मक अधिगम शैली प्रमुख रूप से विद्यमान है तथा गतिविधि-आधारित शिक्षण उनके लिए अधिक प्रभावी हो सकता है।

तालिका 2: शैक्षणिक सफलता का स्तर

समूह	माध्य प्रतिशत	SD
सम्पूर्ण समूह	68.92	10.24

तालिका 2 की व्याख्या

तालिका 2 में दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता का स्तर प्रदर्शित किया गया है। तालिका के अनुसार विद्यार्थियों का औसत शैक्षणिक सफलता स्कोर (माध्य) 68.92 तथा मानक विचलन 10.24 पाया गया। यह दर्शाता है कि अध्ययन में सम्मिलित दिव्यांग विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का स्तर संतोषजनक है। मानक विचलन का मान यह संकेत करता है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में कुछ अंतर अवश्य पाया गया, परंतु यह अंतर अत्यधिक नहीं है। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अधिकांश दिव्यांग विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन औसत से अच्छा पाया गया तथा वे विद्यालयी अध्ययन में संतोषजनक उपलब्धि प्राप्त कर रहे हैं।

तालिका 3: अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता के मध्य सहसंबंध

चर	r-value
अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता	0.62

तालिका 3 की व्याख्या

तालिका 3 में दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता के मध्य सहसंबंध प्रदर्शित किया गया है। तालिका के अनुसार दोनों चरों के मध्य सहसंबंध गुणांक ($r = 0.62$) प्राप्त हुआ। यह धनात्मक एवं मध्यम से उच्च स्तर का सहसंबंध दर्शाता है। इसका अर्थ है कि अधिगम शैली में सुधार होने पर शैक्षणिक सफलता में भी वृद्धि होने की संभावना रहती है। अध्ययन के परिणाम यह संकेत करते हैं कि प्रभावी अधिगम शैली वाले विद्यार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता के मध्य सकारात्मक एवं सार्थक संबंध विद्यमान है।

प्रमुख निष्कर्ष

1) दिव्यांग विद्यार्थियों में क्रियात्मक अधिगम शैली अधिक पाई गई।
2) विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता का स्तर संतोषजनक पाया गया।
3) अधिगम शैली एवं शैक्षणिक सफलता के मध्य धनात्मक संबंध पाया गया।
4) प्रभावी अधिगम शैली वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अधिक पाई गई।

शैक्षिक निहितार्थ

1) शिक्षकों को बहु-संवेदी शिक्षण विधियों का प्रयोग करना चाहिए।
2) व्यक्तिगत अधिगम शैली आधारित शिक्षण योजनाएँ विकसित की जानी चाहिए।
3) समावेशी विद्यालयों में विशेष शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
4) दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए ICT आधारित शिक्षण को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि दिव्यांग विद्यार्थियों की अधिगम शैली उनकी शैक्षणिक सफलता को प्रभावित करती है। यदि शिक्षण प्रक्रिया को विद्यार्थियों की अधिगम शैली के अनुरूप बनाया जाए तो उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण सुधार किया जा सकता है। समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए विद्यार्थियों की व्यक्तिगत अधिगम आवश्यकताओं को समझना अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ -ग्रंथ सूची

[1] Aloni, O., Zion, M., & Spektor-Levy, O. (2024). Students' voices—the dynamic interactions between learning preferences, gender, learning disabilities, and achievements in science studies. *Instructional Science, 52*(5), 711–742. https://doi.org/10.1007/s11251-024-09666-8
[2] Bawalsah, J. A., & Haddad, A. H. (2020). Preferred learning styles among students with learning disabilities. *International Journal of Education, 12*(3), 119–134. https://doi.org/10.5296/ije.v12i3.17265
[3] Best, J. W., & Kahn, J. V. (2016). *Research in education*. Pearson Education.
[4] Clementi, L., & Jiménez López, M. D. (2024). Learning styles and linguistic attitudes in students with specific learning disorders in secondary schools. *Ricerche di Pedagogia e Didattica. Journal of Theories and Research in Education, 19*(1), 159–184. https://doi.org/10.6092/issn.1970-2221/19315
[5] Dunn, R., & Dunn, K. J. (1993). *Teaching secondary students through their individual learning styles: Practical approaches for grades 7–12*. Allyn & Bacon.
[6] Lisnawati, D., Tanya, R., Salsabila, P. P., & Fitriyani, F. (2024). Learning styles of students with intellectual disabilities. *International Journal of Education, Social Studies, and Management, 4*(1), 55–61. https://doi.org/10.52121/ijessm.v4i1.210
[7] Mangal, S. K. (2017). *Advanced educational psychology*. PHI Learning.
[8] Reid, J. M. (Ed.). (1995). *Learning styles in the ESL/EFL classroom*. Heinle & Heinle.
[9] Sharma, R. A. (2018). *Educational research*. R. Lall Book Depot.
[10] UNESCO. (2020). *Global education monitoring report 2020: Inclusion and education: All means all*. UNESCO. https://doi.org/10.54676/JJNK6989